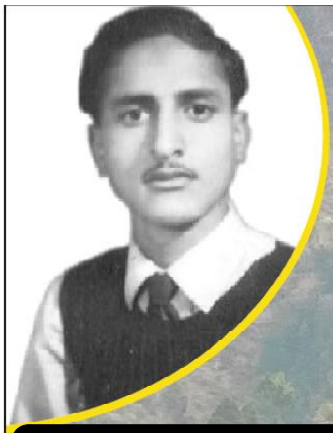

कथाकार - पत्रकार स्व० आनन्द बल्लभ उप्रेती

12वां स्मृति समारोह पर आयोजित

हिमालय का लोक जीवन पर प्रभाव और लला जसुली

(सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय संदर्भ)

राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह

RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 40 अंक 38 हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 24 फरवरी 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

नरेन्द्र सिंह जंगपांगी, डॉ.उनियाल, गंगासिंह पांगती, अंजनी बोनाल, भूपाल बिष्ट, दानू सहित 12 को आनन्दश्री सम्मान

कार्यालय प्रतिनिधि

हिमालय सा व्यक्तित्व था आनन्द बल्लभ उप्रेती का : पांगती

सीमान्त की संस्कृति के गूढ़ रहस्यों को जानें : सोनाल

हल्द्वानी। वरिष्ठ पत्रकार-कथाकार आनन्द बल्लभ उप्रेती का 12वां स्मृति व सम्मान समारोह के आधार वक्ताओं में गंगासिंह पांगती, राम सिंह सोनाल, अंजनी बोनाल ने हिमालय, स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती, दानवीरांगना लला जसुली बूढ़ी शौक्याणी पर विस्तार से बताया। इस बार के आनन्दश्री पुरस्कार से जिन महानुभावों को सम्मानित किया गया उनमें- प्रधान आयकर आयुक्त उत्तराखण्ड नरेन्द्र सिंह जंगपांगी, संयुक्त निदेशक उच्चशिक्षा उत्तराखण्ड डॉ. आनन्द सिंह उनियाल, नाकुरी पट्टी के समाजसेवी व राज्य आन्दोलनकारी गंगा सिंह पांगती, शौका संस्कृति पर अग्रणीय श्रीमती पूजा जंगपांगी बागेश्वर, रं संस्कृति को लेकर अग्रणीय श्रीमती अंजनी बोनाल लखनऊ, पर्वतीय संस्कृति के लिये जुझारु भूपाल सिंह बिष्ट बग्वालीपोखर/बरेली, लोक संस्कृति पर निरन्तर कार्य कर रहे पूरन सिंह दानू विर्थी गिरगांव/बरेली, पत्रकारिता के सजग प्रहरी अमित उप्रेती, सुमित जोशी, सन्तोष जोशी, पवन कुंवर, दिनेश पाण्डे हैं।

(समारोह की विस्तृत रिपोर्ट अगले अंग में दी जा रही है।)

हमारे संरक्षक/बुजुर्ग

जीवन के सौ बसंत देख चुकी हरकी देवी आज भी मिलम की यादों में चैतन्य हैं

डॉ.पंकज उप्रेती

हमारे संरक्षक/बुजुर्ग हमारी शान हैं, इनका होना ही परिवार और समाज को चेतन करता है। इनके समय की बातें हमें सीख देती हैं और इनकी कही चेतना। ऐसी ही वयोवृद्ध हैं अमा हरकी देवी पांगती। श्रीमती हरकी देवी के पति स्व.बाला सिंह पांगती का वर्ष 2007 में निधन हो गया था। वर्तमान में यह अपने समाज की शायद सबसे बुजुर्ग महिला हैं। जीवन के सौ बसन्त देख चुकी अमा आज भी अपनी मिलम की यादों में चैतन्य हैं और समाज में सबको खुश देखना चाहती हैं। वाकेई यह जीवन का 'सम' है जब हम अपनों के बीच हों। श्रीमती हरकी देवी के पुत्र-पुत्रियों में डॉ.कुन्दन सिंह पांगती, स्व. श्रीमती दमयन्ती वृजवाल, श्रीमती चन्द्रा मर्तोलिया, नवराज सिंह पांगती, कवीन्द्र सिंह पांगती और इनकी अगली पीढ़ियां हैं।

जीवन के शतक को प्राप्त कर चुकी हरकी देवी की स्मृतियों में वह चित्र उभर आते हैं जब कभी मिलम और आस-पास बच्चों की टोली में वह भी शामिल थीं। खेत-खलिहान और व्यापारियों की आवत-जावत की रौनक। अपनी यादों को बताते हुए कहती हैं- 'डोटिला, कपकोट जिला बागेश्वर में माता धना देवी और पिता चन्द्र सिंह रावत के घर जन्म लेने के बाद 7-8 साल की उम्र में ही दरकोट के बाला सिंह पांगती जी के

शेष पृष्ठ 2 पर

ऊपर सिंह दुग्ताल की कभी न हार मानने की आदत उन्हें विजेता बनाती है

जीवन सिंह दुग्ताल

श्रद्धेय पिता श्री पर यह कहावत सही बैठता है:- 'कभी हार न मानने की आदत ही, आप एक दिन जीत के कारण बनते हैं।' इसी लगन से वह हमेशा विजेता बनाती रही। पिता स्व. ऊपर सिंह दुग्ताल पुत्र स्व. तिका सिंह एक नेक इन्सान, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, अपने काम के प्रति बहुत कठिन मेहनत, निडर छवि के व्यक्तित्व रहे हैं। यद्यपि बचपन बहुत गरीबी से गुजरा था क्योंकि दादा जी स्व. तिका सिंह का महामारी के दौरान अल्पायु में स्वर्गवास होने के कारण बेसहारा का कारण बना। माता जी का भी देहान्त होश संभालने से पूर्व हो चुका था। जिस वजह से पढाई के प्रति गहन लगाव रखने के बाबजूद घर की गरीबी के कारण स्कूल जाने में असमर्थ रहे। उनके सहपाठी गाँव के रहे थे श्री शेर सिंह दुग्ताल, श्री दौलत सिंह दुग्ताल, श्री जगत सिंह दुग्ताल इत्यादि

पिता जी बताते थे- परिवार की जड़ जमाने यानी हालातों को सुधार में काफी समय लग गया था। बहुत ही अल्प आयु से ही रोजी रोटी के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ा। बाल्यावस्था में भेड़-बकरी चुगाने का काम किया किया, जब थोडा बड़ा हुआ और

होश संभाला फिर अपने कुछ बकरियों से काम काज किया लेकिन उसमे भी कोई खास लाभ नहीं हुआ था। विवाह के बाद चाय की अपने दुकान से रोजी रोटी खुशहाल बनाने का भरसक प्रयास लेकिन यह कार्य भी विफल ही रहे। पिता जी आगे बताते हैं कि हमारे घर के पास पड़ोस

शेष पृष्ठ 3 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

बेरीनाग में चाय बगान की योजना

बेरीनाग की चाय विश्वविख्यात रही है। यहाँ के चाय बागानों से इंग्लैण्ड तक चाय की सप्लाई होती थी। मालदार दानसिंह-मोहनसिंह का नाम एशिया के बड़े कारोबारियों में लिया जाता था और इनके द्वारा चाय फैक्ट्री भी बेरीनाग में लगाई गई, जिसका खण्डहर कुछ वर्ष पहले तक भी जमुनानगर, बेरीनाग के चाय बागान में दिखाई देता था। इसके अलावा अपने घरों के आस-पास चाय की पौध लगाकर उसका निजी उपयोग करने वाले आज भी बेरीनाग में हैं। बेरीनाग की देखा-देखी आसपास अन्य स्थानों पर भी यह प्रचलन था लेकिन जमीनों का खेल और चाय बागानों की उपेक्षा के कारण आज हालत यह हो चुकी है कि चाय बगान के लिये सरकार को योजना बनानी पड़ रही है। ऐसी कौन सी वजह रही हैं जिस कारण बेरीनाग चाय का कारोबार सिमट गया? उन्हें भी जानना चाहिये और इसे नये सिरे से जागृत करना सराहनीय कहा जाएगा।

चाय बगान के नाम पर केवल सौदा न हो, इस बात का ध्यान रखना चाहिये। फिलहाल सुनकर अच्छा लग रहा है कि बेरीनाग में टी-बोर्ड नई भूमि पर चाय बागान विकसित करने की तैयारी में है। इसको लेकर पिथौरागढ़ कलक्ट्रेट में जिलाधिकारी की अध्यक्षता में बैठक हुई। डीएम ने बैठक में कहा कि बेरीनाग टी गार्डन की एक विशेष पहचान रही है। बीते वर्ष चाय बागान को जीआई टैग भी प्राप्त हुआ है। उन्होंने सम्बन्धित अधिकारियों को बेरीनाग में चाय बागान विकसित करने के लिये कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिये। साथ ही उन्होंने जिला पर्यटन विकास अधिकारी को कालीताल का विस्तार व सौन्दर्यीकरण के साथ ही पर्यटन से जोड़ने के निर्देश दिये।

उत्तराखण्ड चाय विकास बोर्ड के पिथौरागढ़ के सहायक प्रबन्धक केसर सिंह मनोला ने बताया है कि चाय बागान विकसित करने के लिए काश्तकारों के साथ पन्द्रह वर्षों का एग्रीमेंट किया जायेगा। मनरेगा के तहत सौ दिन का रोजगार प्रति हेक्टेयर श्रमिक को देने के साथ ही 210 दिन टी बोर्ड की ओर से रोजगार स्थानीय काश्तकारों को दिया जायेगा। एक स्थान पर पाँच हेक्टेयर भूमि पर यह कार्य होगा।

चाय बगान का यह कार्य केवल सरकार या किसी संस्था के भरोसे पर न छोड़कर क्षेत्रवासी इस दिशा में ध्यान दें तो आसाम की तरह बड़े चाय बाग यहाँ भी विकसित हो सकते हैं और स्वरोजगार की दिशा में युवाओं को नये अवसर मिलेंगे। फिर से बेरीनाग-टी का नाम दुनियाभर में होगा।

पिघलता हिमालय के स्वामित्व के सम्बन्ध में
फार्म 4
(नियम 8 देखिये)

1. प्रकाशन स्थल	:	शक्ति प्रेस, जे.के.पुरम्, सेक्टर-डी, मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)
2. प्रकाशन अवधि	:	साप्ताहिक
3. मुद्रक का नाम	:	गीता उप्रेती
(क्या भारतीय नागरिक है?)	:	भारतीय
यदि विदेश है तो मूल देश	:	
पता	:	शक्ति प्रेस, जे.के.पुरम्, सेक्टर-डी, मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)
4. प्रकाशक का नाम	:	गीता उप्रेती
पता	:	पिघलता हिमालय, जे.के.पुरम्, सेक्टर-डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)
(क्या भारतीय नागरिक है?)	:	भारतीय
यदि विदेश है तो मूल देश	:	
5. सम्पादक का नाम	:	गीता उप्रेती
(क्या भारतीय नागरिक है?)	:	भारतीय
यदि विदेश है तो मूल देश	:	
पता	:	पिघलता हिमालय, जे.के.पुरम्, सेक्टर-डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)
6. उक्त व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों, तथा जो पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:	

मैं श्रीमती गीता उप्रेती एतद् द्वारा यह घोषणा करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गये विवरण सत्य हैं।
दिनांक- 24.2.2023
ह0/श्रीमती गीता उप्रेती
प्रकाशक के हस्ताक्षर

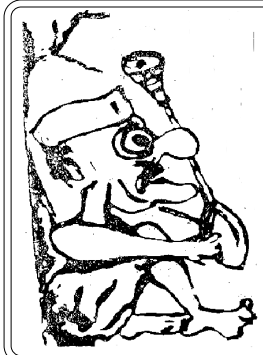

फसक

दाज्यू, बिना सेल्फी के काम अधूरा मान रहे ठैरे

दिमाग में चलने वाला कीड़ा फटक मारता रहता है बल

दाज्यू, कुम्भ स्नान के बाद से हमारे नितका बड़े उदास हैं। कह रहे थे- '32 साल हरिद्वार नौकरी की लेकिन कभी गंगा में डुबकी नहीं लगाई इसलिये इस बार कुम्भ स्नान का कार्यक्रम बनाया लेकिन सेल्फी का झाला देखकर घर में ही दुबक गया।' दाज्यू, आप जानने ही वाले हुए आजकल बिना सेल्फी के काम अधूरा मान रहे ठैरे। नंगे-अधनंगे-चिलमनंगे चाहे जो कुछ हों सेल्फी का जमाना है। दाज्यू, हम तो घर से ही गंगा जी को हाथ जोड़ देते हैं और कामना करते हैं पापियों का उद्धार कर दो। अखाड़ों की लीला खूब हुई इस बार। फिल्म वाली ममता कुलकर्णी को भी सिद्धि प्राप्त हो गई थी बल। फिर हंगामा मचा और उन्हें हटा दिया गया। किन्नर अखाड़े की महामण्डलेश्वर बनाई गई पूर्व अभिनेत्री ममता कुलकर्णी ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया और कहा- 'मैं साध्वी थी ओर रहूँगी। मैं 25 साल से साध्वी हूँ।' दाज्यू, महात्माओं की आत्मा को हम क्या जानें? न जाने कौन किस रूप में है और कौन भेदिया।

कपकोट तहसील से 52 किमी दूर हामटी कापड़ी गाँव में स्थित जुहा बिरुवा बिलौन स्कूल में शराब पीकर पहुँचे दो मास्साब को निलम्बित कर दिया। नशे में भरपूर मास्साबों को अभिभावन शिक्षक संघ ने घेर लिया और वीडिया वायरल किया था। ऐसे में एक्सन तो होना ही था।

दाज्यू, दिमाग में चलने वाला कीड़ा फटक मारता रहता है बल। देखो जरा, किच्छा के विधायक तिलकराज ने स्मार्ट मीटर के खिलाफ गुस्सा दिखाते हुए ऊर्जा निगम से अधिकृत कम्पनी की टीम को खरी-खोटी सुनाई और कई स्मार्ट मीटर सड़क पर पटककर तोड़ डाले। दाज्यू, बेहड़ कह रहे थे- 'यदि घरों में ऐसे मीटर लगाने का प्रयास किया तो जनता के लिये मुकदमे झेलने को भी तैयार हूँ।' कांग्रेस विधायक प्रीतम सिंह बेहड़ के विरोध को जायज बताया है। दाज्यू, विरोध का तरीका मरामार-चुटाचुट ही होता होगा शायद। जनहित का मामला बता रहे हैं नेता लोग। हल्द्वानी के पार्षद मुकुल बल्युटिया के खिलाफ मैसर्स तिरुपति सीमेंट प्रोडक्टस फर्म के महाप्रबन्धक ने दो बार पुलिस को तहरीर दी। उनका कहना है- 'पार्षद व उनके साथियों ने मजदूरों पर अमला किया और वाहनों को नुकसान पहुँचाया। अब मजदूर भय के मारे शहर में चल रहे सीवर और पेयजल के कार्यों के लिये आने में डर रहे हैं।'

देहरादून की डिफेंस कालोनी में 'द सैनिक सहकारी आवास समिति' के भूखण्डों में बड़ा फर्जीबाड़ा हुआ है बल। मामले में 16 पूर्व सैन्य अधिकारियों पर केस होगा। इन्होंने मूल लेआउट प्लान में छेड़छाड़ करते हुए 680 की जगह 726 प्लाट तैयार कर दिये बल।

दाज्यू, मार-कुटान-धुसान के अलावा नशे का व्यापार जोरों पर है। चोरी-चकारी के बाद गंगा स्नान का क्या फायदा? देघाट में 14 किलो गांजे के संग दो तस्कर गिरफ्तार किये गये। पुलिस गश्ती दल ने काशीपुर महुवाखेड़ा के दो युवा मामले में पकड़े। दाज्यू, कोई कटे चाहे कोई पिटे। हमारे बमदा खुश हैं। कह रहे थे- 'पूर्व विधायकों की पेशन में वृद्धि हो गई है। ये बहुत जरूरी है। अभी और वृद्धि होनी चाहिये।' दाज्यू, उमेश और चैम्पियन विवाद में सरकार ने हाईकोर्ट में अपना पक्ष रख दिया है।

दाज्यू, दिमाग के कीड़े ही तो ठैरे, रुद्रपुर नगर निगम से सेवानिवृत्त दो चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों ने मुख्य नगर आयुक्त और जिलाधिकारी उधमसिंह नगर के नाम की फर्जी मुहर व पत्र बनाकर पेंशन निधि खाते से 19.46 लाख रुपये हड़प लिये। कीड़े कुलबुलाने पर कुछ भी सम्भव होता है बल।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

जीवन के सौ.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

साथ विवाह दी गई। तब बहुत कम उम्र में विवाह हो जाता था। जब बच्चे विवाह की पुरानी रीति से जुड़े थे, दरकोट से बारात डोटिला आई। यात्रा व अन्य साधनों की कमी के जमाने में बारात रुक-रुक कर आगे बढ़ती। घर से विदाई के बाद शामा में उनकी बारात रुकी। विवाह की रश्में दरकोट में की गई। अपने बचपन को याद करते हुए हरकी अमा बताती हैं- विवाह के बाद भी बालपन के कारण बच्चों के साथ खेलने जाती थी। जमाना बहुत अच्छा था और लोगों में अपनत्व भी। सभी बच्चे एक-दूसरे के घर आना-जाना होता। बचपन की सहेली मथुरा लस्पाल, लीला मर्तोलिया और भी बहुत से थे। धीरे-धीरे घर की जिम्मेदारी बढ़ने लगी और जीवन चक्र में बहुत बदलाव देखने को मिले। पहले घर के बने कपड़े, जेवरातों का का चलन था और अपने तीज-त्यौहारों पर खूब खुशियों की धूम होती थी। श्रमदान कर लोग एक दूसरे का सहयोग करते। मकान बनाने से लेकर खेतीबाड़ी तक में सब एक-दूसरे का हाथ बटाते। पुरानी धुंधली यादों को याद करते हुए हरकी देवी बताती हैं- 'तिब्बत व्यापार जाने वालों की विदाई और आने पर ढोल-नगाड़ों के साथ स्वागत होता था। महिलाएं ऊनी वस्त्र, दन-कालीन के कार्य में व्यस्त रहती थीं।' वह मिलम के साथ भैंसखाल के प्रवास को भी याद करती हैं। माइग्रेशन के समय शीतकाल में परिवार घाटियों में उतर आता आते हैं तब इनका परिवार और पड़ोसी भैंसखाल में आ जाते थे। अब जीवन के उत्तरार्द्ध में हरकी अमा का अधिकांश समय टीवी में धार्मिक सीरियल रामायण, महाभारत देखने में बीत रहा है। साथ ही ऊन कातने, दिया के लिये रुई की बाती बनाने में जुट जाती हैं। इस दौरान परिजनों की उत्सुकता पर अपनी स्मृतियों का सांझा आशीष देती हैं।

प्रधानमंत्री के दौरे के लिए मुखवा गाँव तैयार

उत्तरकाशी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की आगामी 27 फरवरी को प्रस्तावित शीत कालीन यात्रा के लिए हर्षिल और मुखवा गाँव तैयार है। इस स्वागत समारोह के लिये मुखवा गाँव को सजाया जा रहा है। सभी घरों की छतों को लाल रंग से रंगा गया है। साथ ही सड़कों, पैदल रास्तों को दुरुस्त करने के साथ ही पार्किंग निर्माण का काम हो चुका है। नृत्य गीत सहित अन्य तैयारी भी पूरी हैं।

पांखू अंडेश्वर मन्दिर के स्वरूपानन्द महाराज को मिला महामण्डलेश्वर का दायित्व

थल। प्रयागराज में महाकुम्भ में स्नान और दीक्षा लेने गए पांखू स्थित अण्डेश्वर महादेव मन्दिर के महन्त स्वरूपानन्द महाराज को जूना अखाड़े के स्वामी अवधेशानन्द गिरी महाराज ने गुरु सन्त की शिक्षा दीक्षा देकर उन्हें महामण्डलेश्वर का दायित्व प्रदान किया है। पीठाधीश्वर बने स्वामी स्वरूपानन्द यति महाराज के थल पहुँचने पर लोगों ने शोभा यात्रा निकालते हुए स्वगत किया। शोभा यात्रा बालेश्वर मन्दिर होते हुए अण्डेश्वर महादेव मन्दिर गई। ढोल-नगाड़ों के साथ स्वमी जी का जगह-जगह फूल-मालाओं से स्वागत हुआ। पांखू भगवती मन्दिर में विधिवत पूजा-अर्चना हुई।

बालेश्वर मन्दिर में महामण्डलेश्वर स्वामी स्वरूपानन्द यति का रामलीला कमेटी अध्यक्ष दिनेश पाठक, सचिव अर्जुन रावत, शिव मन्दिर पुजारी दामोदर भट्ट सहित तमाम लोगों ने स्वागत किया।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

महापुरुष की गाथा

स्व.ऊपर सिंह दुग्ताल(मूल-ती राठ)

प्रथम पृष्ठ का शेष

में ही एक पटवारी जी रहते थे नाम याद नहीं आ रहा है जो कि हमेशा दुकान में आया जाया करते थे। उन्होंने पिता जी की मेहनत और कार्य के प्रति लगन को लम्बे समय से देखा था एक दिन अपने कमरे में बुलाया और कुछ अहम् बात बताया कि भारत सरकार ने भेड़ पालकों को एक बिशेष योजना प्रदान की है जो इस कार्य में कठिन परिश्रम और मेहनत करेगा उसे बहुत फायदा हो सकता है। यह कार्य आप सकते है मैंने आपके मेहनत और कठिन परिश्रम को साक्षात् देखा है इसी कारण आपके अपने भविष्य को देखते हए भेड़ पालन के लिए सरकारी योजना के लिए आपका फार्म मैंने भर दिया है अब इसमें केवल हस्ताक्षर ही करने बाकी है, सोचकर बता देना फार्म को आगे भेजना है। यह सुनकर पिता जी को फिर से भेड़ पालन के दल-दल में जाने का विचार से मना करने का विचार आया था फिर सोचा कि एक बार घर परिवार से भी विचार बिमर्श किया जाये। घर में इस विषय में काफी विचार किया गया लेकिन अन्तिम फैसला करना काफी कठिन था फिर भी इस कठिन फैसले को स्वयं की जिम्मेदारी लेते हुये फार्म को भरवा दिया। यही फैसला पिताजी का टर्निंग पॉइंट रहा। उसके बाद सरकारी भेड़ पालन का कार्य दो साल से अधिक समय तक अपने जिन्दगी के सारे मेहनत, कठिन परिश्रम इसी कार्य में लगा दिये। दारमा से गाँव निगाल्पनी और उसके बाद टनकपुर भेड़ पालन के लिए लगातार आना पड़ा तब मैं शायद दो ढाई साल का रहा हुंगा, मुझे धुंधली यादें हैं अभी भी। उन दो साल में अपने तथा परिवार के द्वारा कड़ी मेहनत का फल मिलने लगा था। पिता ने 45 भेड़ से 120 तक पहुँचा दिया था। सरकारी नियम से अनुसार 50 भेड़ वापस लिया गया फिर भी काफी भेड़ अपने पास बच गये थे यही पूंजी हमारे परिवार को संवार गयी। इसी भेड़ से बाद में पिता जी ने नेपाल में भी व्यापार कर अपनी सम्पत्ति में इजाफा किया और मुझे पढाई में कोई कमी नहीं की जिसकी वजह से आज इस मुकाम तक पहुँच पाया हूँ। भेड़ पालन के दौरान काफी कुछ पिता जी ने सीखा और अपने लगन के कारण ही बाद में व्यापार हिसाब-किताब में भी पारंगत हुए थे।

अपने दुग्तू गाँव में सबसे बड़े बुजुर्ग पिता जी को 95 साल पार करने का गर्व हासिल हुआ। वह अन्तिम समय तक अपनी पुराने यादों को हमेशा ताजा करने का भरसक प्रयास किया करते थे और हर कथा को नये सिरे से शुरू कर अन्तिम छोर तक ज्यों का त्यों सुनाया करते तथा हमेशा की तरह बहुत सन्तोष नजर आते थे। पिता जी ने कभी भी हार नहीं मानी थी कठिन से कठिन स्थिति पर भी डटकर सामना किया था। मेहनत, कठिन परिश्रम ईमानदारी ही उनका मूल मन्त्र था। हमें उन्हीं से यह सीख मिली है। पिता जी के अपने जीवन काल में अपने पारिवारिक कार्य के अलावा समाज को बहुत भी बहुत योगदान दिये। कतिपय घटनाओं को कर्मानुसार करने एक प्रयास मात्र है-

1. वनों से विशेष लगाव:- पिता जी ग्राम सभा दुग्तू के लगभग 20 साल लगभग बन पंचायत की देखरेख की जिम्मेदारी उनके कड़क स्वाभाव व ईमानदारी के कारण दिया गया था। जिसे उन्होंने बड़े जिम्मेदारी से निभाया। गाँव की सुन्दरता एवं बुनियाद को मजबूत करने के लिए पेड़ को बचाना बहुत जरूरी था उन्होंने भरसक प्रयास किया और सफल भी हुआ। यह काम उतना आसान भी नहीं था जैसा कहने और सुनने में लगता है। रोज सुबह 4 बजे निस्वार्थ भाव से जंगल का भ्रमण कर अनावश्यक पेड़ जो कटे है चेक करना और कटे हुए पेड़ को गिनना और पता लगाना एक महत्वपूर्ण कार्य था। ग्राम पंचायत में दण्ड में वसूल की गई धनराशी को जमा करना हर एक रोज का काम था इसमें ग्रावासियो का भी सहयोग सराहनीय होता था। गाँव के ठीक पीछे जंगल जो आज काफी बड़े रूप में देखते है उस पर भी काफी पावन्दी कर रखी थी जिससे यह सभी पेड़ों को पनपने का मौका मिला था। आज इन्हीं पेड़ों के कारण गाँव काफी सुरक्षित लगता है। आज जो छवि गाँव दुग्तू सोन गाँव जंगलो का जो सौन्दर्य हम देखते है उसके पीछे पिता जी ने वन पंचायत पद में रहते हुए काफी मेहनत किया गया था। मुझे याद है यह बन पचायत का काम पिता जी ने 2014 को इस पद से त्याग पत्र देकर गाँव के अन्य लोगों को यह सौंप दिया था। तत्पश्चात गाँव वासियों ने बिना पावन्दी के देवदार के लगभग सारे बड़े पेड़ काटकर आज पूरा जंगल खाली कर दिया है। अब मात्र भोज पत्र के पेड़ ही दिखते हैं। मैंने भी इस बात को रखने का प्रयास किया कि पेड़ के बदले नये पेड़ भी तो बोया या लगया जा सकता है इस पर अभी किसी का ध्यान नहीं है बाद में गाँव वासियों को चिन्तन मनन करना ही होगा।

2. कृषि एवं भेड़ पालन पर विशेष लगाव:- गाँव दुग्तू काफी उपजाऊ भूमि पहले से ही रहा है। पिता जी को कृषि कार्य व भेड़ पालन में हमेशा से ही विशेष लगाव रहा था। उन्होंने अपने खेतो में बहुत परिश्रम किया जिसे देख-देखी हम लोग भी बचपन में कोशिश करते थे।

गाँव दुग्तू में बर्फ काफी देर तक टिकने के कारण मिट्टी में नमी काफी रहती है तथा पूर्व में भेड़ बकरिया, गाय, बेल, झुपू, घरेलु जानवर काफी मात्रा में होने के कारण खेतो में पर्याप्त मात्रा में खेत-खलिहान में खाद भी पहुँच जाता था जिस कारण पूरे दारमा घाटी में कुट्टू के खेती सबसे बढ़िया पैदावार अपने गाँव दुग्तू-सोन में होती थी। मेरे विचार में पिता जी के समय 70-80 का दशक कृषि के लिए स्वर्ण युग कहना उचित होगा क्योंकि सभी परिवारों का खेती के प्रति विशेष लगाव, मेहनत, पशुपालन पर विशेष रूचि ने गाँव के कृषि को नई ऊँचाई मिली। जिसे मैंने भी साक्षात रूप में देखा था तब मैं गाँव के जूनियर हाई स्कूल दुग्तू-गोठी में कक्षा 6 से 8 तक पढ़ा करता था। उस समय गाँव में काफी परिवार थे। गाँव के चारों तरफ कट्टु के पोधे व फाफर के पोधे गुलाबी तथा पीले रंगों से खेत दंगतो गबला मेला अगस्त के महीने के दौरान रंगीन दिखाई देता था। इसके अतिरिक्त आलू, मूली का पैदावार भी काफी मात्रा में होता था। पैदावार इतना कि जमीन के अन्दर विशेष रूप से बनाये गये कोल्ड स्टोरेज में कुट्टू के अनाज रखे जाते थे और घर में लकड़ी के तख्तो से बनाये गये अलमारी जिसे रं भाषा में बजम कहा जाता था रखने का व्यवस्था किया गया था। बकरी का बोझ कुन्चा आने से पूर्व कुट्टू का अनाज व आलू धारचूला पहुँचाया जाता था।

3. गाँव के आय बढ़ाने के साधन:- गाँव के हितार्थ आय के साधन के लिए पिता जी के समय गाँव में विचार-विमर्श कर तिब्बत से याक ले आना जिससे यहाँ घर घर में याक के बच्चे जुप्पू जुमो, तलभो का बहुत अधिक मात्रा में कई सालो तक प्रचार प्रसार हुआ, जिस कारण प्रत्येक परिवार से कुछ शुल्क लिया जाता था जिससे गाँव के आय में इजाफा होता था। खेतो को घरेलु जानवरों से देखभाल के लिए एक व्यक्ति को नियुक्त किया गया था जिसका काम रोज खेतों में जाकर घरलु जानवरों को देखना था जिससे खेती को कोई नुकसान न हो यदि कोई जानवर खेत में मिलता तो लाकर में बन्द किया जाता था दण्ड के रूप में रूपये देने के बाद ही छोड़ा जाता था। इसके अलावा गाँव की सुरक्षा के लिए कुन्चा जाने के दौरान एक परिवार को गार्ड या चौकीदार के तौर पर रखा जाता था जिसे गाँववासी राशन कुछ धनराशि देते थे जिससे गाँव में सभी की सम्पति सुरक्षित रहे।

4. खनन पर रोक:- गाँव निगाल्पनी जो कि काली नदी के एकदम किनारे टापू पर स्थित है। गोठी गाँव कि तरह हमेशा काली नदी के तेज वेग से गाँव हमेशा खतरे में दिखता है अत: जब भी पिता जी गाँव में रहे थे गाँव के निचले भाग में रेता, बजरी खनन रोकने का लगातार भरसक प्रयास किया गया। यदि समय पर खनन नहीं रोका जाता तो आज यह गाँव गोठी गाँव की तरह आधा का बाढ़ में बह जाता। गाँव के किनारे पेड़ बोने का विचार भी उन्हीं का था जो कि आज जंगल के रूप में सामने है। भविष्य में भी गाँववासियो से इस तरह के नेक कार्य निस्वार्थ भाव से करने की ढेर सारे उम्मीदें है। गाँव में पीपल का पेड़ भी 1972-1973 में लगाया था जो आज विशाल वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। उन्हीं के प्रयास से पीपल के पेड़ के नीचे बैठने का चबूतरा बनाया गया है ताकि कोई भी पथिक छाये का आनन्द ले सके। सन् 1970 के आसपास निगाल्पनी में खोला के पानी में बादल फटने के कारण बाढ़ ने विशाल रूप लेकर आधे गाँव को बहा ले गया जिसमे हमारा घर भी था।

5. उपरोक्त के अलावा ग्राम पंचायत में भी पिता जी का बहुत नाम था स्पष्टवादी, सत्यवादी महापुरुष के कारण ही गाँव के न्याय पंचायत में पिता जी का उपस्थित होना तत्कालीन समय में आवश्यक होता था। पिता जी के सदगुण आज भी गाँव वासी याद कर भावुक हो जाते हैं।

'पिघलता हिमालय' में दो शब्द लिखकर श्रद्धेय स्व.पिता को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

ज्योतिष की बातें- 218

24 फरवरी 2025 को मंगल मिथुन राशि में मार्गी हो जाएगा अत: अब मंगल भिन्न-भिन्न राशियों के अनुसार अपने शुभाशुभ फल सभी जातकों को सामान्य रूप से प्रदान करेगा।

27 फरवरी 2025 को बुध अपनी नीचराशि मीन में प्रवेश करेगा। वहाँ पर उच्चराशिगत शुक्र से युति भी होगी। साथ ही राहु से युति होने के कारण बुध पीड़ित भी रहेगा। इसके पूर्व 25 फरवरी 2025 को बुध पूर्व दिशा में उदय भी हो जाएगा। कुल मिलाकर बुध निर्बल ही रहेगा, बुद्धि में जड़ता प्रदान करेगा। अत: अगले 70 दिन बुध बुद्धि, व्यापार, वाणिज्य, लेखन, साहित्य आदि अपने कारक विषयों में कुम्भ, धनु, तुला, सिंह, मिथुन व वृषभ राशि के जातकों को सामान्य शुभ फल प्रदान करेगा। अन्य जातकों को अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

2 मार्च 2025 को शुक्र अपनी उच्चराशि मीन में वक्री हो जाएगा अत: अगले 42 दिन शुक्र शुभाशुभ फल सभी जातकों को अल्पमात्र में ही प्रदान करेगा। महाशिवरात्रि- महाशिवरात्रि का पर्व फाल्गुन कृष्णपक्ष चतुर्दशी निशीथव्यापिनी तिथि में मनाया जाता है। तदनुसार बुधवार 26 फरवरी 2025 को रात्रि में चारों प्रहर भगवान शंकर को जलाभिषेक किया जाएगा। इस दिन व्रत करने से वर्ष भर की बारह शिवरात्रियों के व्रत का पुण्य प्राप्त हो जाता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 109

चुनाव में बहुमत प्रणाली

दिल्ली विधानसभा के चुनाव में ऐसा कहा जा रहा है कि 'आप' पार्टी साफ हो गई, केजरीवाल की राजनीति अब समाप्त हो चुकी है, जनता ने केजरीवाल को ठुकरा दिया है आदि आदि। ऐसा कहने वाले यह नहीं देख पाते हैं कि 'आप' पार्टी और भाजपा को लगभग बराबर ही वोट मिले हैं। 'आप' को लगभग 46प्रतिशत और भाजपा को 48प्रतिशत वोट मिले हैं । केवल दो प्रतिशत का ही अन्तर है। एक प्रतिशत वोट ही इधर-उधर होने से पार्टियों की हार जीत हो जाती है। भाजपा को वोट तो 'आप' से केवल २४ प्रतिशत अधिक मिला है लेकिन सीटों की संख्या दो गुनी से भी अधिक हो गई। समझना यह चाहिए कि 'आप' पार्टी की जड़ें अभी भी जनता में जमी हुई हैं। यह चुनाव प्रणाली का दोष ही है कि आधे कम वोट मिलने पर भी 70प्रतिशत सीटें मिल गई हैं। दूसरी बात यह है कि जिसको 46प्रतिशत वोट मिला उसकी सत्ता में सहभागिता शून्य हो गई है और जिसको 48प्रतिशत वोट मिला उसका सत्ता में प्रभाव 100प्रतिशत हो गया है। यह भी इस चुनाव प्रणाली का दोष है। सत्ता में सहभागिता पार्टी को मिले वोटों के अनुपात में होना चाहिए। यदि ऐसा न भी हो तो कम से कम प्राप्त सीटों के अनुपात में तो सत्ता में भागीदारी होनी ही चाहिए।

अत: जब तक चुनाव प्रणाली में परिवर्तन नहीं किया जाएगा तब तक इस लोकतन्त्र में देश का भला नहीं हो सकता ।

-ओंकार नाथ कोष्टा

भौगोलिक आधार पर हो पंचायतों का परिसीमन

लोहाघाट। राज्य आन्दोलनकारी गणेश पुनेठा ने निर्वाचन आयोग से पंचायतों का भौगोलिक आधार पर परिसीमन करने की मांग की है।

उन्होंने मुख्य चुनाव अधिकारी को ज्ञापन सौंपते हुए कहा कि उत्तराखण्ड राज्य का अधिकांश भाग पहाड़ी क्षेत्र में आता है। भौगोलिक विषमता के कारण गाँवों का विकास नहीं हो पा रहा है। विकेन्द्रीकृत विकास न होने से लोकतांत्रिक ढांचा सशक्त नहीं हो पा रहा है। ऐसे में जिले की कुछ क्षेत्र पंचायत ऐसी हैं जो नदियों के उस पास के ग्रामों में शामिल हो गई हैं। एक ग्राम पंचायत की दूरी चार किमी से भी दूर है। भौगोलिक स्थित देख परिसीमन होता तो सबकुछ व्यवहारिक होता।

पहाड़ के किसान कर सकेंगे एआइ का प्रयोग

पिथौरागढ़। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) का महत्व जीवन के हर क्षेत्र में बढ़ चुका है। ऐसे में अब पहाड़ के किसान भी एआइ से जुड़ने जा रहे हैं। इससे किसान घर बैठे ही अपने खेतों में कीट प्रबन्धन कर सकेंगे। इससे मिनटों में किसानों को प्रबन्धन की पूरी जानकारी उनके मोबाइल फोन पर उपलब्ध हो जाएगी। इससे फसलों पर होने वाली बीमारियों व नुकसान को रोकने में मदद मिलेगी।

जिला मुख्यालय में जिले के प्रगतिशील किसानों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन कर देहरादून से आई सहायक वनस्पति संरक्षण अधिकारी दिव्या जोशी ने इस एप के उपयोग की जानकारी दी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

स्वतंत्रता सेनानियों के पार्क व मूर्तियां लगेंगे

चम्पावत। कला एवं संस्कृति विभाग की ओर से जिले के तीन स्थानों पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के पार्क बनने के साथ ही उनकी मूर्तियां लगेंगी। संस्कृति विभाग के अधिकारी अरविन्द गौड़ ने बताया है कि लोहाघाट के सीमान्त जाख जिंडी में लाल सिंह, सुदर्का में दुर्गा दत्त जोशी व मंगोली में बेनीराम थ्वाल के नाम पर पार्कों का निर्माण किया जा रहा है।

सीबकथोर्न का उत्पादन होगा

धारचूला। सीमान्त की दारमा, व्यास, चौंदास घाटी में सीबकथोर्न का उत्पादन किया जायेगा। इन्हें उत्पादन कर हर्बल टूरिज्म के तौर पर विकसित किया जायेगा। प्रभागीय वनाधिकारी आशुतोष सिंह ने बताया कि परियोजना के माध्यम से स्थानीय काश्तकारों को रोजगार का अवसर मिलेगा। सीबकथोर्न को तरल सोना भी कहा जाता है जो औषधीय पौधा है।

जमरानी के लिये 3.15 करोड़ का बजट

देहरादून। जमरानी बांध निर्माण के लिए जल शक्ति मंत्रालय 315 करोड़ का बजट जारी कर दिया है। इस बजट के जारी होने से बांध निर्माण कार्य में और गति आयेगी। इस महत्वाकांक्षी योजना से पेयजल व सिंचाई की समस्या दूर होगी।

नैनीताल और हरिद्वार में साइबर थाने खुलेंगे

देहरादून। बढ़ते साइबर अपारध को देखते हुए नैनीताल और हरिद्वार में जल्द ही साइबर क्राइम पुलिस स्टेशन खुलेंगे। इसके लिये स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) ने शासन को प्रस्ताव भेज दिया है। इसके अलावा सीसीपीएस देहरादून व रुद्रपुर में मानवशक्ति बढ़ाई जाएगी।

भू-माफियाओं पर दबंगई का आरोप

नैनीताल। रामगढ़ ब्लाक के नैकाना गाँव निवासी बुजुर्ग महिला माधवी नौरियाल ने पुलिस में शिकायती पत्र भेजकर भू-माफियाओं पर जमीन पर कब्जा करने की कोशिश करने का आरोप लगाया है। साथ ही जमीन पर कब्जा जमाने वालों से परिवार की जानमाल को खतरो का अंदेशा जताया है। परिवार में दिव्यांग बेटे के साथ ही विधवा बहू है।

गुंजी में चारागाह की भूमि पर शिव धाम योजना से भारी रोष, अपील

धारचूला। सीमान्त क्षेत्र गुंजी के मनेला में पर्यटन विभाग के शिवधाम बनाने के प्रस्ताव पर ग्रामीणों ने भारी रोष जताया है। कहा कि ग्राम के मनेला में सरकारी कार्यों के लिए अधिग्रहीत भूमि के बाद शेष दो-दो नाली प्रत्येक ग्रामीण को आवंटित की जाए।

मुख्यमंत्री से अपील करते हुए ग्रामीणों ने पत्र भेजा है। जिसमें कहा गया है कि चीन सीमा पर निवास करने वाली जनजाति का मुख्य व्यवसाय पशुपालन है। गुंजी गाँव में मनेला मैदान ग्रामीणों का अतीत से चारावाह है। उनका आरोप है कि इस मैदान पर सेना, आईटीबीपी, बीआरओ व अन्य सरकारी उपक्रम निर्माण कर कब्जा कर रहे हैं। इसमें भी अब पयटन विभाग रही सही कसर शिवधाम बनाकर पूरी करने जा रहा है। सरकार ने इस गाँव को वाइब्रेंट गाँव घोषित किया है लेकिन यह भी अनुरोध है कि जीवन यापन के लिये चारागाह की जगह सुरक्षित रहने दी जाए। ग्रामीणों ने इस सम्बन्ध में प्रधान प्रशासक सुरेश गुन्जयाल, संजय गुन्जयाल, मंगल दलों ने संयुक्त बैठक भी की।

सत्ताहित में लोकहित की अनदेखी

अल्मोड़ा। जनसत्ता के पूर्व सम्पादक व वरिष्ठ पत्रकार ओम थानवी ने कहा कि पत्रकारिता केवल सूचना का जरिया नहीं है बल्कि पत्रकार समाज में समझ तथा विवेक स्थापित करता है, जो लोकतंत्र को मजबूत करता है। हाल के वर्षों में पत्रकारिता का झुकाव जिस तरह सत्ता की ओर हो रहा है वह चिन्ता का विषय है।

साभार मीडिया फाउंडेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बदलता मीडिया, बदलता लोकतंत्र विषय पर थनवी ने कहा कि संचार की विषयवस्तु में वृद्धि और प्रसार में तेजी आई है। रेडियो एक ऐसा माध्यम है जिसका प्रसार का विस्तार व्यापक हो सकता है। मौजूदा समय में पत्रकारिता के गिरते स्तर पर चिन्ता व्यक्त करते हुए ओम थनवी ने कहा कि खबरों में अब कंटेंट का विचलन, भाषा का पतन और जनसरोकारों की कमी साफ तौर पर देखी जा सकती है।

साकार होगी दून-मसूरी रोप-वे योजना

देहरादून। दून-मसूरी रोप-वे परियोजना के कार्य में 15 टावर का काम पूरा हो गया है। कुल टावर बनाए जाने हैं। मसूरी गांधी चौक में बनने वाले अपर टर्मिनल के लिए समतलीकरण किया जा चुका है। इसके अलावा गांधी चौक से रोप-वे तक पहुँचने के लिए मार्ग का निर्माण भी हो चुका है। पुरकुल में लोअर टर्मिनल कार्य और पार्किंग में चौथे मॉजिल का निर्माण चल रहा है। पर्यटन विभाग का दावा है कि वर्ष 2026 तक इसे पूर्ण कर संचालन शुरू कर दिया जायेगा।

सचन कुर्वे, सचिव उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद का कहना है कि दून-मसूरी रोप-वे का कार्य तेजी से चल रहा है। 50 प्रतिशत से अधिक टावर का निर्माण हो चुका है। उम्मीद है कि वर्ष 2026 तक इसे पूर्ण कर लिया जायेगा। निर्माण कार्य की निरन्तर निगरानी की जा रही है ताकि समय से गुणवत्ताजनक कार्य हो। बताया है कि देहरादून शहर से 12 किमी दूर पुरकुल गांव में रोप-वे का एक छोर और दूसरा मसूरी में बनाया जा रहा है।

कामन नदी से खुदान को लेकर धरना

खटीमा। कामन नदी में हो रहे खुदान को लेकर दिया के ग्रामीणों में रोष बढ़ता जा रहा है। विरोध में किये जा रहे धरना प्रदर्शन में विधायक भुवन कापड़ी भी शामिल हुए। उन्होंने शासन-प्रशासन से खुदान तत्काल बन्द करने की मांग करते हुए मुख्यमंत्री को पत्र भेजा।

एसडीएम को माध्यम से प्रेषित ज्ञापन में कहा गया है कि कामन नदी में उप खनिज खुदान व ढुलान का कार्य सरकार द्वारा कराया जा रहा है लेकिन ग्रामीणों की भूमि के कटाव से उनको भारी नुकसान होगा। ग्रामीणों ने उप खनिज खुदान व ढुलान की अनुमति निरस्त कर अतिशीघ्र इस पर रोक की मांग की है। साथ ही चेतावनी दी कि यदि मनमानी होती रही तो व्यापक आन्दोलन होगा। दूसरी ओर एसडीएम राजेन्द्र बिष्ट ने कहा खुदान से नुकसान नहीं हो रहा है। आपदा के दौरान कामन, प्रवीन और जगबूढ़ा नदी में भारी मात्रा में सिल्ट जमा हो गई थी।

बागजाला में नोटिस रद्द करने की मांग

हल्द्वानी। अखिल भारतीय किसान महासभा का एक प्रतिनिधिमण्डल बागजाला की समस्याओं को लेकर प्रभागीय वनाधिकारी तराई पूर्वी वन प्रभाग से मिला। डीएफओ से हुई वार्ता में महासभा ने बागजाला की समस्याओं से अवगत करया और विकास कार्यों पर लगी रोक हटाने की मांग की।

प्रतिनिधिमण्डल ने मांगपत्र सौंपते हुए बागजाला में हो रहे विकास कार्यों पर लगी रोक को हटाने की अपील की। उन्होंने बताया कि बागजाला क्षेत्र में 1947 से अधिक समय से ग्रामीण बसे हुए हैं, जिन्हें उ.प्र. सरकार ने भूमि पट्टे दिए थे। हालांकि पिछले कुछ सालों से ग्रामीणों को उजाड़ने की कोशिशें की जा रही हैं। बताया कि वन विभाग के सरकारी सीसी मार्ग को तोड़ने और जल जीवन मिशन योजना का कार्य रोकने के कारण क्षेत्र का विकास बाधित हो रहा है। डीएफओ ने मांगें पूरा करने का आश्वासन दिया।

चार धाम यात्रा में 300 नई बसें शामिल होंगी

ऋषिकेश। चारधाम यात्रा में इस साल संयुक्त रोटेशन यात्रा व्यवस्था समिति के बेड़े में 300 बसें शामिल होंगी। कुल 2500 बसों का बेड़ा यात्रियों को सुगम आवागमन की सुविधा के लिये तैयार किया जा रहा है। आगामी यात्रा सीजन को देखते हुए इसके लिये तैयारी होने लगी है।

चैती मेले की तैयारियां

काशीपुर। चैती मेले की तैयारियों को लेकर अधिकारियों ने पण्डा परिवार के साथ बैठक की। नगर निगम सभागार में मेला मजिस्ट्रेट/एसडीएम अभय प्रताप सिंह, तहसीलदार पंकज चन्दोला, मेयर दीपक बाली व नगर आयुक्त विवेक राय की उपस्थिति में चैती मेला तैयारी को लेकर चर्चा हुई। बताया गया कि 15 मार्च से बिजली, दुकान, पार्किंग, खेल तमाशा बाजार के लिये टेन्डर प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। इसका निस्तारण 30 मार्च से पहले कर लिया जायेगा।

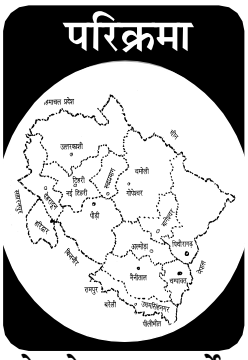

रेलवे लाइन सर्वे को पहुँची टीम का विरोध किया

बागेश्वर। टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन के लिए रेलवे स्टेशन और कालोनी के सर्वे के लिये पहुँची टीम का ग्रामीणों ने भारी विरोध किया और टीम को वापस भेज दिया। ग्राम खोली में चल रहे सर्वे कार्य को लेकर दिल्ली की एक संस्था जुटी है। सर्वेयर खोली के ग्रामीणों की उपजाऊ भूमि तक पहुँचे तो ग्रामीणों ने विरोध किया। पूर्व प्रधान कुंवर सिंह परिहार के नेतृत्व में ग्रामीणों ने सर्वेयरों द्वारा लगाए रेलवे के पिलर उखाड़ कर फेंक दिये।

एस्ट्रो विलेज में चांद-तारों के दर्शन के अलावा जसुली संग्रहालय दर्शन

नैनीताल। पर्यटकों के लिये इस बार से एस्ट्रो विलेज में नई सुविधाएं जोड़ दी गई हैं। सरोवर नगरी आने वाले पर्यटक अपने काटेज के भीतर बैठकर भी चांद-तारों के अलावा दानवीरांगना लला जसुली बूढ़ी शौयाणी के इतिहास को जान सकेंगे।

बताते चलें कि तीन वर्ष पूर्व नैनीताल जिलाधिकारी धीराज गर्ब्याल के प्रयासों से सुयालबाड़ी स्थित जसुली देवी की प्राचीन धर्मशाला के जीर्णोद्धार का कार्य पूरा हो चुका है। जिसके बाद पर्यटन विभाग इन दोनों इकाईयों के टेंडर प्रक्रिया में जुटा हुआ है।

2022 में पर्यटन विभाग को 90 नाली भूमि हस्तान्तरित होने व बजट मिलने के बाद ताकुला में एस्ट्रो विलेज स्थापित करने का कार्य शुरू हुआ था। अब तीन वर्ष में यह कार्य पूर्ण हो चुका है। इसके अलावा सुयालबाड़ी स्थित जसुली अमा की धर्मशाला का जीर्णोद्धार कार्य भी पूरा हो गया है। जिला पर्यटन अधिकारी अतुल भण्डारी ने बताया कि

दोनों ही इकाईयों के टेंडर कराने की प्रक्रिया चल रही है। जिला पर्यटन विकास समिति की बैठक में स्वीकृति मिलने के बाद तय की गई दरों पर टेंडर आमंत्रित किये जाएंगे।

इस प्रकार इन दोनों स्थलों की ओर पर्यटकों का खासा रूस होगा और इतिहास सम्बन्धी जानकारी भी विस्तार पाएगी। एस्ट्रो विलेज की छतों पर शीशा लगाया गया है जिससे वहाँ ठहरने वाले पर्यटक रात को भीतर से भी चांद के दर्शन कर सकेंगे। आठ कॉटेजों की सम्पत्ति का प्रति माह 62 हजार रुपये किराया निर्धारित किया गया है। ओपन टेंडर आमंत्रित करने के बाद विभाग को इससे अधिक आमदनी होने की उम्मीद है।

जसुली देवी धर्मशाला भवन के जीर्णोद्धार के साथ ही रेस्टोरेंट भी बनाया गया है। इसके अलावा एक पुराने धर्मशाला भवन को जसुली देवी संग्रहालय के रूप में स्थापित किया गया है। इस संग्रहालय में जसुली देवी व कुमाऊँ के इतिहास से जुड़ी झलकियां की पेंटिंग व अन्य माध्यमों से प्रदर्शन किया जायेगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

शताब्दी

श्रीमती हरकी देवी पांगती
(पत्नी स्व. बाला सिंह पांगती)
दरकोट, मुनस्यारी

जन्म- 20.02.1925

पूज्यनीय माता जी को उनके 100वें जन्म दिवस की हार्दिक मंगलकामनाएं।

डॉ.कुन्दन सिंह पांगती(पुत्र)
श्रीमती चन्द्रा मर्तोलिया(पुत्री)
नवराज सिंह पांगती(पुत्र)
कवीन्द्र सिंह पांगती(पुत्र)
समस्त परिवार एवं शुभ चिंतक

वनंतरा प्रकरण
बचाव पक्ष के प्रार्थना पत्र हुआ निरस्त

कोटद्वार। बहुचर्चित बनन्तरा प्रकरण को लेकर अपर जिला एवं सत्र न्यायधीश की अदालत में सनवाई जारी है। बीते दिनों न्यायालय ने अभियोजन पक्ष्र के एक प्रार्थना पत्र पर सुनवाई की। प्रार्थना पत्र में बचाव पक्ष की उस याचिका का विधोध किया गया था, जिसमें बचाव पक्ष ने विधायक के साथ ही तत्कालीन जिलाधिकारी व उपजिलाधिकारी को गवाही के लिए समन भेजने की प्रार्थना की थी। अभियोजन पक्ष्र की दलीलें सुनने के बाद न्यायालय ने बचाव पक्ष की याचिका निरस्त कर दी। साथ ही मामले में अगली सुनवाई की तिथि तय की।

अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अदालत में चल रही सुनवाई के दौरान बचाव पक्ष की ओर से प्रार्थना पत्र दिया गया था जिसमें यमकेश्वर विधानसभा की विधायक के साथ ही तत्कालीन डीएम एसडीएम को गवाही के लिये समय भेजने की प्रार्थना थी।

लला जसुली बूढ़ी शौक्यानी जीर्णोद्धार समिति का वार्षिकोत्सव सुयालबाड़ी में होगा

नैनीताल। लला जसुली बूढ़ी शौक्यानी जीर्णोद्धार और प्रबन्धन समिति का वार्षिकोत्सव 23 मार्च को सुयालबाड़ी में होगा, इसके लिये विचार-विमर्श किया गया।

समिति से जुड़े लोगों में आयोजन को लेकर उत्साह है और वह चाहते हैं कि जिस प्रकार से प्राचीन धर्मशाला का नवीन रूप दिखाई दे रहा है। ऐसे में आयोजन के द्वारा इसे और भी प्रचारित किया जाए। बताते चलें की खीनापानी की धर्मशाला को जिस प्रकार से आकर्षित रूप में सजा दिया है उस पर सबका ध्यान है। इसकी देखा-देखी जसुली अमा की अन्य धर्मशालाओं का भी जीर्णोद्धार हो और जिन धर्मशालाओं में कब्जे हो चुके हैं उन्हें मुक्त किया जाए, इस दिशा में समिति प्रयासरत है और लगातार पत्राचार किया जा रहा है। शासन-प्रशासन का ध्यान भी इस ओर है।

राष्ट्रीय खेलों के समापन के बाद शुभंकर मौली का स्वागत

हल्द्वानी/देहरादून। 38वें राष्ट्रीय खेलों के सकुशल सम्पन्न होने पर प्रदेश सरकार खुश है। इस बड़े आयोजन को तय स्थानों पर किया गया और समापन पर देश के गृह मंत्री अमित शाह मुख्य अतिथि रहे। इस पूरे समापन के बाद भी जश्न का खुमार है। राष्ट्रीय खेल का शुभंकर 'मौली' खेलों के समापन के बाद सीएम आवास पहुँचा। मुख्यमंत्री सहित राज्य के हर जिले में इसका स्वागत किया गया। इस मौके पर सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि खेलों के दौरान मौली की सक्रियता ने सबका दिल जीतने का कार्य किया। उत्तराखण्ड का राज्य पक्षी मोनाल की विशिष्टता से देशभर के लोग परिचित हुए। खेलमंत्री रेखा आर्य ने कहा कि जल्द ही डाइनिंग टेबल पर चैम्पियंस मीट होगी।

पंचेश्वर बांध डूब क्षेत्र पुनर्वास की तीन दिवसीय बैठक 22 मार्च से

पिथौरागढ़/झूलाघाट। पंचेश्वर बांध परियोजना का कार्य तेजी से आगे बढ़ने की सम्भावना है। दिल्ली में भारत और नेपाल के जलशक्ति, स्रोत और सिंचाई मंत्रियों के स्तर की बैठक में पंचेश्वर बांध परियोजना का कार्य आगे बढ़ाने पर सहमति बनी है।

बताया जा रहा है कि दिल्ली में नेपाल के ऊर्जा जलस्रोत एवं सिंचाई मंत्री दीपक खड्का की भारत के समकक्ष जलशक्ति मंत्री सी.आर.पाटिल के मध्य हुई वार्ता में बहुउद्देशीय पंचेश्वर बांध परियोजना का कार्य जल्दी आरम्भ करने पर सहमति बनी। डीपीआर जल्द तैयार करने और पंचेश्वर बांध डूब क्षेत्र में आने वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के पुनर्वास व्यवस्था के लिये 22 से 24 मार्च तक बैठक की तिथि तय की गई है। जिसमें डूब क्षेत्र से प्रभावित होने वाले ग्रामीणों के पुनर्वास की नीति तय की जाएगी। बैठक में इस बात पर भी सहमति बनी है कि बांध के जल के संचालन पर दोनों देशों के मध्य कुछ बिन्दुओं पर दर्ज आपत्तियों का निस्तारण महाकाली सन्धि के अनुसार किया जाएगा।

इधर पंचेश्वर बांध की पुन: हलचल की सूचना पर इससे प्रभावित सभी क्षेत्र वासी आन्तरिक मंथन में हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादक: श्रीमती गीता उप्रेती **फोन/मोबाइल**
9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)